अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

(नियम: प्रारंभीक से ही तबला और लहरा के साथ नृत्य करना होगा)

<u>प्रारंभीक</u>

पूर्णांक: ५०, न्यूनतम: १८

क्रियात्मक: ४०, शास्त्र : १०(मौखिक)

शास्त्र :

१) तीनताल का परिचय

२) कथ्थक नृत्य का परिचय (पाँच वाक्यों में)

३) खुद का, संस्थाका और गुरु का परिचय (पाँच वाक्यों में)

४) परिभाषाए : लय, विलंबित लय , मध्यम लय , द्रुत लय , मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग और तिहाई |

क्रियात्मक :

१) तीनताल का परिचय |

२) तीनताल में ततकार बराबर , दुगुन, चौगुन तिहाई सहित |

३) तीनताल में ६ सादे तोड़े , २ चक्करदार तोड़े , २ तिहाई|

४) तीनताल के ठेके की ताल लगाना|

५) तीनताल के गिनती से ठाह, दुगुन, चौगुन हाथसे ताल लगाना |

६) सभी रचनाओं की पढंत आवश्यक |

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

<u>प्रवेशिका – प्रथम वर्ष</u>

पूर्णांक: ७५ , न्यूनतम: २६

क्रियात्मक: ६० , शास्त्र : १५ (मौखिक)

* प्रारंभिक के सभी पाठयक्रम को दोहराना

शास्त्र :

१) लय (बराबर, दुगुन, चौगुन) सम, मात्रा , ताली, खाली, गतनिकास, ततकार, तोड़ा , गतपलटा , तथा बाँट इन शब्दों की परिभाषा व्यक्त करना |

२) ताल – लिपि के चिन्हों को पहेचानना |

३) दादरा तथा कहेरवा की जानकारी |

४) पाँच वर्तमान कत्थक गुरुओं के नाम |

५) अभिनय दर्पण के अनुसार निम्नलिखित असंयुक्त हस्तमुद्राए तथा उनका प्रयोग :

- पताका * त्रिपताका
- अर्धपताका * कर्तरिमुख
- मयूर * अर्धचंद्र
- अराल * शुकतुंडक
- मुष्टि * शिखर

क्रियात्मक :

- तीनताल

  रंगमंच प्रणाम – १ सादा आमद – १

  ठाठ - २ तोड़े - ६

  चक्करदार तोड़े – २ परन - २

- गतनिकास

  १) सीधी गत, मटकी गत, बांसुरी गत |

  २) ततकार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित |

  ३) हाथ से ताल लगाते हुए सभी तोड़ो का अभ्यास |

  ४) तीनताल के ठेके को ताल सहित ठाह, दुगुन, चौगुन में पढ़ना |

  ५) तीनताल में ४ ततकार के पलटे |

- केहरवा या दादरा ताल में एक अभिनयगीत जिसके बोल मुखाग्र हो |

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

<u>प्रवेशिका पूर्ण</u>

पूर्णांक: १२५ , न्यूनतम: ४४

शास्त्र : ५०, न्यूनतम : १८

क्रियात्मक: ७५ , न्यूनतम: २६

शास्त्र :

१) कत्थक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास (१० से १५ वाक्योमे) |

२) आमद, तोड़ा, टुकड़ा, ततकार, परन, चक्करदार, कवित्, तिहाई, अंग, प्रत्यंग, उपांग, गतभाव, हस्त मुद्रा आदि की परिभाषा उदाहरण सहित|

३) अ) लोकनृत्य की परिभाषा तथा पाँच प्रादेशिक लोकनृत्य के नाम जानना
ब) सात शास्त्रीय नृत्यशैलियो के नाम उनके प्रांत सहीत |

४) असंयुक्त हस्तमुद्रए: प्रयोग (अभिनय दर्पण से)

* कपित्थ	* कटकामुख	* सूचि
* चन्द्रकला	* पद्मकोश	* सर्पशीष
* मृगशीष	* सिंहमुख	* कान्गुल
* अलपद्म	* चतुर	* भ्रमर
* हंसास्य	* हंसपक्ष	* संदेश
* मुकुल	* ताम्रचुड	* त्रिशूल

५) किसी प्रसिध्द कथ्थक कलाकार की जीवनी| (१० वाक्य में)

६) वर्तमान पाँच तबला वादकों के नाम , जो कथ्थक नृत्यकी संगत करते हो |

७) क) लिपिबध्ध: तीन ताल में एक तिहाई, एक साधारण आमद (ता थई तत थई) एक परन जुडी आमद , एक कवित, एक परन, एक तोड़ा |

ख) झपताल में ठेके की ठाह (बराबर), दुगुन, एक तिहाई, एक तोड़ा, एक सादा आमद , एक परन|

ग) दादरा तथा कहरवा ताल के ठेके को ताल चिन्ह सहित लिखना|

क्रियात्मक:

- तीनताल

२ ठाट	१ परनजुडी आमद
१ रंगमंच प्रणाम	४ तोड़े (कम से कम ३ आवृति)
२ परन	२ चक्करदार परन
१ कवित	१ चक्करदार तिहाई

त्रिताल में आधी, बराबर, दुगुन, चौगुन, अठगुन तिहाई सहीत

त्रिताल में बाँट तिहाई सहीत

गतनिकास – मोरमुकुट, घूँघट, बांसुरी

गतभाव – राधा का पानी भरने जाना, कृष्ण का कंकर से मटकी फोड़ना, राधा का रुष्ट होना, कृष्ण का हँसना आदि|

गतभाव में दिखाई गयी हस्त्मुद्राओ के नाम

- झपताल

  १ ठाठ १ आमद

  १ तिहाई २ तोड़े

  १ चक्करदार तोड़ा १ परन

  ततकार बराबर दुगुन तिहाई सहीत |

  सभी बोलों का हाथ से ताली देकर पढ़ना आवश्यक है|

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

मध्यमा प्रथम वर्ष

पूर्णांक: २०० , न्यूनतम: ७०

शास्त्र : ७५, न्यूनतम : २६

क्रियात्मक: १२५ , न्यूनतम: ४४

शास्त्र :

१) प्रारंभिक से प्रवेशिका तक के सभी शब्दों की जानकारी |

२) नर्तन के भेद – नृत, नृत्य, नाटय की परिभाषा|

३) लास्य तथा तांडव की केवल परिभाषा|

४) अभिनय दर्पणानुसार ग्रीवा भेद |(४ प्रकार)

५) अभिनय दर्पणानुसार नौ प्रकार के शिरोभेद|

६) लोक नृत्यतथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा|

७) जीवनीया: पं.कालिका प्रसाद , पं. बिन्दादीन महाराज , पं.हरिहर प्रसाद , पं.हनुमान प्रसाद |

८) जयपुर तथा लखनऊ घराने की विशेषता|

९) संयुक्त हस्त मुद्राएं (अभीनय दर्पणानुसार)

परिभाषा और प्रयोग

१. अंजली	२. कपोत	३ .कर्कट
४ .स्वस्तिक	५. डोला	६ पुष्पपुट
७. उत्संग	८. शिवलिंग	९. कटकावर्धन
१०. कर्तरी स्वस्तिक	११. शकट	१२.शंख

१०) तीनताल, झपताल, एकताल के पाठ्यक्रम की रचनाओ को लिपिबध्ध करना|

११) गतभाव के प्रसंगों का वर्णन लिखना |

१२) संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय |

क्रियात्मक:

- तीनताल में विशेष योग्यता:

  गुरुवंदना

  तीन ठाट (तीन अलग poses)

  दो आमद (१ सादा + १ परनजुडी)

  तीन चक्करदार तोड़े जो ४ आवृती से कम न हो

  तीन परन (१ तीश्र जाति परन आवश्यक)

  तीन चक्करदार परन

  दो कवित

  तीन गिनती की तिहाई

  तत्कार में आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, अठगुन करना तथा बाँट या परन का विस्तार करना |

- झपताल:

२ ठाठ	१ परनजुड़ी आमद
१ सलामी	३ सादे तोड़े (तीन आवृतिसे अधिक आवर्तनो के)
२ चक्करदार तोड़े	२ परन
२ चक्करदार परन	१ कवित
३ तिहाई	ततकार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहीत

- एकताल:

१ ठाठ	१ आमद
२ तोड़े	१ चक्करदार तोड़ा
१ परन	१ चक्करदार परन
१ तिहाई	ततकार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित

- तीनताल में :

  गतनिकास की विशेषता – जुमर (जुमर-घुंघरू युक्त माथे का बिंदी जैसा मांग का गहना) कलाई|

  मटकी उठाने के तीन प्रकार

  गतभाव - माखनचोरी

  अभिनयपक्ष में – एक भजन अथवा भक्तिरस के आधारपर गीत या पद पर अभिनय (भावप्रस्तुती)

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

मध्यमा द्वितीय वर्ष

पूर्णांक: २५० , न्यूनतम: ८८

शास्त्र : १०० , न्यूनतम : ३५

क्रियात्मक: १५०, न्यूनतम: ५३

शास्त्र :

१) कत्थक नृत्य की मंदिर परम्परा और दरबार परम्परा का सम्पूर्ण ज्ञान |

२) अ) बनारस घराने की विशेषताए |

ब) जयपुर, लखनऊ घराने की सम्पूर्ण परम्परा का ज्ञान(वंश परम्परा सहीत)

३) भौह संचालन तथा द्रष्टिभेद के प्रकार और उनका प्रयोग (अभिनय दर्पनानुसार)

४) लास्य तथा तांडव की व्याख्या तथा उनके प्रकार |

५) तीनताल के ठेके को आधी १/२, पौनी ३/४, कुआडी १ १/४, आडी १ १/२
बिआडी १ ३/४ (पौने दो) लय में लिपिबध्द करना|

६) क) अभिनय की स्पष्ट परिभाषा|

ख) आंगिक–अभिनय, वाचिक-अभिनय, आहार्या-अभिनय, सात्विक-अभिनय की व्याख्या तथा प्रयोग|

७) संयुक्त हस्त की निम्नलिखित मुद्राओं की परिभाषा तथा प्रयोग :
चक्र, सम्पुट, पाश, कीलक, मत्स्य, कुर्म, वराह, गरुड़, नागबन्ध, खटवा, भेरुन्ड|

१) जीवनिया: पं.अच्छन महाराज, पं. शंभू महाराज, पं. लच्छुमहाराज, पं. नारायण प्रसाद, पं. जयलाल|

९) तीनताल, रूपक तथा धमार के सभी बोलो की लिपिबध्ध क्रिया|

१०) कत्थक नृत्य के अध्ययन की शारीरिक , मानसिकऔर बौधिक उपयोगिता|

क्रियात्मक:

श्री शिव वंदना अथवा श्री कृष्ण वंदना

१) तीन तालमें विशेषताओं सहीत :

एक उठान, एक ठाट, एक आमद, एक परमेलु, एकनटवरी तोड़ा, एक फरमाईशी चक्करदार (पहली धा, पहेले दूसरी धा, दूसरे तथा तीसरी धा तीसरी समपार) एक गणेश परन, एक ततकार की लड़ी (तकिट तकिटधिन)

२) रूपक:

१ ठाट	१ सादा आमद
४ सादे तोड़े	२ चक्करदार तोड़े
२ परन	२ चक्करदार परन
२ तीहाई	१ कवित

ततकार – बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित|

३) एकताल:

२ ठाठ	१ परन जुडी आमद
४ तोड़े	२ चक्करदार तोड़े
२ परन	२ चक्करदार परन
१ कवित	३ तिहाई

ततकार – बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, तिहाई सहीत|

४) सीखे हुई सभी बोलो की ताल देकर पढंत करना|

५) गतनिकासमें विशेषता: रुखसार, छेड़छाड़ , आँचल आदि|

६) गतभाव में – कालिया दमन |

७) 'होरी' पद पर भाव प्रस्तुति|

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

विशारद प्रथम वर्ष

पूर्णांक: ४०० , न्यूनतम: १८०

शास्त्र : १५० , न्यूनतम : ५२

क्रियात्मक: २५० (क्रिया:२००+ मंच प्रदर्शन :५०)

न्यूनतम: १२८

शास्त्र :

प्रथम प्रश्नपत्र

अंक: ७५, न्यूनतम : २६

१) नाटय की उत्पति (भरतानुसार) नाटय का प्रयोग तथा नाट्य काप्रयोजन |
२) नवरसो की परिभाषा |
३) नायक के चार भेद : धीरोध्द्त , धीरललित , धीरोदात , धीराप्रशांत |
४) चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा : अभिसारिका, खंडीता , विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका|
५) दशावतार में से मत्स्य , वराह, कुर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्रए |
६) ताल के दस प्राणों की व्याख्या |
७) भरतनाट्यम , मनिपूरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी | इनकी वेशभूषा तथा वाध्यो का ज्ञान |
८) तीनताल, जपताल, धमार में आमद , बेदम तिहाई , फरमाईशी परन तथा चक्करदार परन, तिपल्ली तथा कवित को लिपिबध्ध करना |
९) अ) गुरूशिष्य परंपरा का महत्त्व |
ब) शिष्य के गुण तथा गुरू के प्रति उसका कर्तव्य |

द्रीतीय प्रश्नपत्र

अंक: ७५, न्यूनतम: २६

१) रस की निष्पति, स्थाई भाव , भाव, विभाव, अनुभाव, व्याभिचारी भाव आदि की परिभाषा |
२) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान :
तिपल्ली, कवित, फरमाईशी परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, त्रिभंग, सुढंग, लाग-डांट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास-विन्यास|
३) कथ्थक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की व्याख्या :
अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी|
४) कथ्थक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान |

५) रास ताल (13) , धमार(14) , गजजंपा (15) , पंचम सवारी (15) में आमद, तिहाई, तोड़ा, चक्करदार परन तथा कवित आदि को लिपिबद्ध करना|

६) जीवनिया: नटराज गोपीकृष्ण, कत्थक साम्रागी सितारा देवी, पंडित दुर्गालाल व् गुरू कुंदनलाल गंगानी |

७) निबंध ज्ञान :

a. रास तथा कथ्थक
b. ठुमरी का कत्थक नृत्य से सम्बन्ध

८) नर्तक/ नर्तकी के गुण ओर दोष |

क्रियात्मक:

१) सरस्वती वंदना

२) तीनताल के अतिरिक्त जपताल में विशेष तैयारी

३) गजजंपा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोड़े, एक परन तथा एक कविता का प्रदर्शन|

४) गतनिकास: आँचल, नाव घुंघट के प्रकार |
गतभाव: पिछले वर्षो के सभी गताभावो का प्रदर्शन तथा द्रोपदी चीर हरण |

५) ठुमरी भाव (शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक)

६) एक तराना या त्रिवटकिसी ताल में |

७) हाथ से ताली लगाकर सभी बोलो की पढंत

८) अभिसारीका, खणडिता , विप्रलबधा तथा प्रोषितपतिका नायिका पर गताभाव या एन से संबंधीत पद या ठुमरी पर भाव नृत्य |

९) तीनताल या जपताल की तत्कार में लड़ी या चलन |

१०) अभिनय दर्पण का श्लोक
"अंगीकं भुवनं यस्य...."

११) पिछले संत कवियोको छोड़कर एनीकिन्ही दो संत कवियों के कविता या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना |

- मंच प्रदर्शन : स्वातंत्र्यरूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य(20 से 30 मिनट तक)

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय

कथ्थक नृत्य

विशारदद्वीतीयवर्ष

पूर्णांक: ४०० , न्यूनतम: १८०

शास्त्र : १५० , न्यूनतम : ५२

क्रियात्मक: २५० (क्रिया:२००+ मंच प्रदर्शन :५०)

न्यूनतम: १२८

शास्त्र :

प्रथम प्रश्नपत्र

अंक: ७५, न्यूनतम: २६

१) प्राचीन नृत्यसंबंधी घटनाओं की जानकारी |

२) मध्य युगीन ग्रंथो की जानकारी |

३) नवरसो का पूर्ण ज्ञान |

४) नायिका भेद का विस्तृत ज्ञान |

क) धर्म भेद से नायिका , स्वकीया, परकीया, सामान्या|

ख) आयु विचार से नायिका, मुगधा, मध्या, प्रोढा |

ग) प्रकृतिअनुसार नायिका, उतमा, मध्यमा, अधमा|

घ) जाति भेद से नायिका , पद्मिनी, चित्रणी , शंखिनी और हस्तिनी |

ङ) परिस्थिति अनुसार अष्ट नायिकाओमे से कल्हान्तारिता , वासकसज्जा , विरहोत्कंठीता , स्वाधीनपतिका|

५) ओडिसी , कुचिपुडी, तथा मोहिनी अट्टम नृत्य की व्याख्या तथा वाध्यो व् वस्त्र की जानकारी |

६) लय और ताल का उद्गम तथा कत्थक नृत्य में महत्व |

७) नाट्यशास्त्र तथा अभिनयदार्पण के अनुसार संयुक्त और असंयुक्त मुद्राओं का तौलनिकअभ्यास |

८) छोटी सवारी(15) , शिखर(17) में आमद , तिहाई, तोड़ा, परन आदि को लिपिबध्ध करना |

९) रामायण, महाभारत, भागवतपुराण तथा गीतगोविन्द की संक्सेप में जानकारी |

द्रीतीय प्रश्नपत्र

अंक: ७५ न्यूनतम: २६

१) निम्नखित पात्रो की मुद्रए (अभिनय दर्पनानुसार)

ब्रह्मा, विष्णु, सरस्वती, पार्वती, लक्षमी ईंद्र, अग्नि, यम, वरुण, वायुतथा दशावतार समबन्धी (मत्स्य, कुर्म, वराह, न्रूसिंह , वामन, परशुराम , राम, बलराम, कृष्ण , कल्कि)

२) पौराणिक साहित्य में नृत्य के सन्दर्भ |

३) जीवनिया: गुरू सुन्दरप्रसाद , गुरू मोहनराव कल्याणपूरकर, महाराज कृष्णकुमार, पं. बिरजू महाराज

४) नृत्य में लोकधर्मी तथा नाट्यधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग |

५) विदेशो में भारतीय नृत्यकला की लोकप्रियता |

६) आधुनिक काल के नृत्य में विकसित होनेवाले नये तकनीक तथा उनका स्वरूप (ध्वनी संयोजन , प्रकाश सज्जा , नेपथ्य, साय्क्लोरमा, सलाईड्सआदि)

७) कत्थक नृत्य में कवित तथा ठुमरी का स्थान |

८) गायन, वादन, चित्रकला, मुर्तिकला तथा साहित्य का नृत्य से सम्बन्ध|

९) मत ताल (18) , रास ताल (13) में आमद , तोड़ा, परन , चक्करदार तोड़ा, फरमाईशी परन , परमेलु आदी |

क्रियात्मक:

१) विष्णुवंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी)

२) छोटी सवारी (15) , शिखर (17) , मत ताल(18) , रास ताल (13) में विशेष तैयारी

३) तीनताल, जपताल रूपक में सादे ठेके पर नाचना |

४) छोटी-छोटी कथाओं पर नृत्य निर्मिति करना |

५) तत्कार में बाँट , लड़ी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन |

६) गतभावमें दक्षता , कांचन मृग (सीताहरण तक) कंसवध| (कथा कहकर अभिनय करना अनिवार्य)

७) बैठकर ठुमरी या पद की पंक्ती पर अनेको प्रकार से संचारी भाव का विस्तार करना |

८) सभी तालो की रचनाओ का ताल देकर पढ़ना |

९) त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदी में से किन्ही दो का प्रदर्शन | (राग, ताल, शब्द – परिचय)

१०) नवरसो को बैठ कर केवल चहेरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता |

११) दशावतारो संबंधी किसी रचना पर प्रदर्शन| (रचनाकार, राग, ताल आदि का ज्ञान)

१२) तीनताल में लय के साथ भृकुटी , ग्रीवाआदि का संचालन |

१३) तीनताल का नगमा (लहरा) बजाने या गाने की क्षमाता|

१४) परीक्षक द्वारा दिये गए प्रसंग को तुरंत प्रस्तुत करना |

१५) अष्टनायिकाओं पर भाव प्रस्तुति|

- मंच प्रदर्शन : स्वातंत्र्यरूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (20 से 30 मिनट तक)